जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक

ककसाड़

वर्ष 10 अंक 94 • जनवरी, 2024
मूल्य : 25/- रुपए
ISSN 2456-2211

ककसाड़
राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

दिल्ली से प्रकाशित

ककसाड़ निम्नानुसार सदस्यता राशि

व्यक्तिगत वार्षिक	₹ 350/-	आजीवन व्यक्तिगत	₹ 3000/-
संस्था और पुस्तकालयों के लिए वार्षिक	₹ 500/-	संस्था	₹ 5000/-

सदस्यता राशि प्रेषित करने के लिए ककसाड़ बैंक खाता विवरण

• खातेदार का नाम– **ककसाड़** • बैंक– **सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, खान मार्केट, दिल्ली**
• खाता संख्या– **3483675563** • आई.एफ.एस.सी. कोड– **CBIN0280310**
• एम.आई.सी.आर. कोड–**110016018**

विज्ञापन हेतु दरें

रंगीन		श्वेत/श्याम
फुल पेज (इनर)	₹ 15,000	₹ 10,000
बैक पेज कवर	₹ 25,000	—
बैक इनसाइड कवर	₹ 10,000	—
फ्रन्ट इनसाइड कवर	₹ 20,000	—
डबल स्प्रीड (इनर)	₹ 30,000	₹ 20,000

सहयोग राशि प्रेषित करने के बाद निम्नलिखित नंबर पर एस.एम.एस./फोन अथवा ई-मेल द्वारा तत्काल भेजें– 09968288050/09425258105/011-22728461, kaksaadeditor@gmail.com

कार्यालय---सी-54 रिट्रीट अर्पाटमेंट, 20-आई.पी. एक्सटेंशन, दिल्ली-110092

ककसाड़ पत्रिका और लिटिल बर्ड प्रकाशन
की पुस्तके यहाँ भी उपलब्ध है:

1. मौर्या बुक स्टाल
बी.एच.यू गेट लंका, वाराणसी-221005 उ.प्र.

2. राजू मैगजीन सेन्टर
दुकान न.1, ओम साई गेस्ट हाउस (SBI ATM के पास) लंका, वाराणसी -221005 उ.प्र.

3. दीवान न्यूज एजेंसी
सदर बाजार, झाँसी-284001 उ.प्र.

4. पंजाब बुक सेंटर
एस.सी.ओ. 1126-27, सेक्टर-22 बी, चंडीगढ़-160022 हरियाणा

5. लालमुनि बुक स्टाल
आर.एम.शाह चौक, पूर्णिया-854301 (बिहार)

6. सेन्ट्रल न्यूज एजेंसी
110, ई- बंगला साहिब रोड, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001

7. स्टूडेंड कॉर्नर
गोलघर सिनेमा रोड, गोरखपुर-273003 उ.प्र.

8. यूनिवर्सल बुक हाउस
शॉप न.17, विक्रम बिल्डिंग, लंका, वाराणसी-221005 उ.प्र

9. गीता पुस्तकालय
दुकान न.17, श्री विश्वनाथ मंदिर, बी.एच.यू, वाराणसी-221005 उ.प्र.

10. सेन्ट्रल न्यूज एजेंसी
डिपार्टमेंट एल.सी, 4-ई/15, अशोक सेंटर झंडेवालान एक्स, नई दिल्ली-110055

11. इंडियन बुक डिपो
आदित्य भवन, प्रथम तल, बी.एन.वर्मा रोड अमीनाबाद पो.ऑ. के सामने, लखनऊ-226018 उ.प्र.

ककसाड़

(जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक)

जनवरी 2024 **वर्ष-10 • अंक-94**

संस्थापना वर्ष 2015

प्रबंध एवं परामर्श संपादक
कुसुमलता सिंह

संपादक
डॉ. राजाराम त्रिपाठी

कानूनी सलाहकार
फैसल रिजवी, अपूर्वा त्रिपाठी

•

ग्राफिक डिजाईन
रोहित आनंद (लिटिल बर्ड)

• मुख्य कार्यालय एवं रचनाएँ भेजने का पता •

सी-54 रिट्रीट अपार्टमेंट, 20-आई.पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-110092

फोनः 9968288050, 011-22728461

•

• संपादकीय कार्यालय •

151, डी.एन.के. हर्बल इस्टेट, कोण्डागाँव, छ.ग.-494226

फोनः 9425258105, 07786-242506

ई-मेल : kaksaadeditor@gmail.com
kaksaadoffice@gmail.com

वेबसाइट : www.kaksad.com

मूल्य : **रु. 25** (एक प्रति), वार्षिक : **रु. 350/-** संस्था और पुस्तकालयों के लिए वार्षिक : **रु. 500/-** वार्षिक (विदेश) : **$110** यू.एस. आजीवन व्यक्तिगत : **रु. 3000/-** संस्था : **रु. 5000/-**

संपादन-संचालन पूर्णतः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक
दिल्ली से प्रकाशित होने वाली 'ककसाड़' पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं जिनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं।
• ककसाड़ से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे • **कुसुमलता सिंह** स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक।

अनुक्रम

दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड (संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा पुरस्कृत

4. **संपादकीय**

साक्षात्कार

6. गोंड कला में नए प्रयोग ही कला को आगे ले जाएंगे (गोंड कलाकार **मिथिलेश श्याम** से **कुसुमलता सिंह** की बातचीत)

लोकपर्व

8. छेरछेरा-प्राचीन लोक परंपरा : **डॉ. प्रकाश पतंगीवार**

लेख

10. देश-विदेश के नववर्ष : **संध्या सिलावट**

15. रामविलास शर्मा : भक्ति आंदोलन में स्त्रियों का योगदान : **डॉ. बिजय कुमार रबिदास**

22. ताना भगत समुदाय आंदोलन : **जय प्रकाश गुप्ता**

कहानी

24. नौकरी : **संजय कुमार सिंह**

29. जंगल में ज्ञान का पाठ : **प्रमोद भार्गव**

32. आखिरी खुशी : **लेखक- ज़्योज़स बाल्तुसिस**
अनुवाद : शरदेन्दु कुमार

कविता

39. देव लाल गुर्जर 39. प्रेम प्रकाश 39. सुधीर कुमार सोनी
40. निर्मला पुतुल

व्यंग्य

42. नैतिक बनाम अनैतिक : **डॉ. पंकज साहा**

लघुकथा

43. आप दान हैं तो मैं संतोष हूँ : **एस.सी. जैन**

28. **यादें**

पुस्तक समीक्षा/पुस्तक चर्चा

44. यायावर शब्दशिल्पी पं बनारसीदास चतुर्वेदी : **डॉ. आर. के. नीरद**

45. हिमालय के आंगन से : **डॉ. ओंकारनाथ द्विवेदी**

31. **क्या है ककसाड़?**

46. **सांस्कृतिक एवं साहित्यिक समाचार**

आवरण कलाकृति - मिथिलेश श्याम (गोंड कलाकार)
इनकी कला की विशेषता मछली के छिलके और रस्सियों की ऐंठन की आकृति को चित्रों में लाना।
भोपाल (म.प्र.)
मो. 74892-12375

संपादकीय

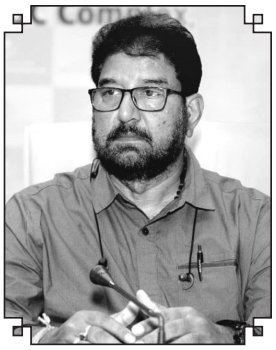

पत्रिका का यह अंक आपके हाथों में जब पहुँचेगा तब तक आप बहु प्रचलित ग्रेगोरी कैलेंडर के अनुसार बीते वर्ष को विदाई देकर नए वर्ष में मजबूती से कदम रख चुके होंगे। आगत के स्वागत और विगत की विदाई विषय पर यूँ तो बहुत कुछ लिखा लिखा गया है। इस संदर्भ में सुप्रसिद्ध गीतकार बालस्वरूप राही की प्रसिद्ध कविता है 'गत की और आगत'। यह सचमुच दिल को छू जाती है। यूँ तो पूरी कविता ही बहुत सुंदर है, पर आप तो बस उसकी इन दो पंक्तियों को जरा देखें :–

कुछ अपना-सा लगता हर आने वाला,
जो चला गया वह बेगाना है, कल है।

सच्चाई यही है, उगते सूरज को सारी दुनिया नमन करती है, डूबते सूरज को तो केवल पूर्वांचल में ही अर्घ्य मिलता है वह भी साल में केवल एक दिन। पिछले कुछ समय से सोशल मीडिया पर हर साल दिसंबर के आखिरी दो हफ्तों में अंग्रेजी कैलेंडर के बजाय विक्रम संवत के अनुसार नया वर्ष मनाने का अभियान चलाया जाता है। गत गौरव, प्राचीन परंपरा व महान सनातन संस्कृति तथा भावी हिंदू-राष्ट्र के अनुरूप विक्रम संवत के अनुसार चैत्र मास के प्रथम दिवस को नववर्ष दिवस बनाने का बकायदा मिशन चलाया जाता है। खैर चलो मान लिया कि अगर ऐसा हो भी जाता है, तो इससे किस-किस को और क्या-क्या फर्क पड़ेगा?

विश्व के अलग-अलग देश, सभ्यताएँ तथा अलग-अलग समुदाय साल के 365 दिनों में 80 अलग-अलग तारीखों को अपना नववर्ष मनाते हैं। इसका मतलब यह हुआ की हर हफ्ते कोई न कोई देश या समुदाय अपना नववर्ष मना रहा होता है। कई बार तो हफ्ते में दो-दो दिन नववर्ष बनाए जाते हैं। वैसे हम आपको यह भी बता दें कि इस मामले में भी हम पीछे नहीं है, अपने भारत में भी तीस अलग-अलग नव-वर्ष मनाए जाते हैं।

कभी विश्व की सबसे बड़ी जनसंख्या वाला देश कहलाने वाला हमारा चिर प्रतिद्वंद्वी देश चीन, जिसे हमने कंधे से कंधा मिलाते हुए कम से कम प्रजनन व जनसंख्या के मामले में तो पटखनी देकर बढ़ती आबादी के क्षेत्र में हमें सिरमौर बना ही दिया है, वो चीन भी इस बार अपना नव वर्ष 10 फरवरी से शुरू कर 25 फरवरी तक मनाएगा। चीनी वर्ष जानवरों के नाम से जाने जाते हैं जैसे की चूहा, बैल, बाघ, खरगोश, ड्रैगन, सांप, घोड़ा, बकरी, बंदर, मुर्गा, कुत्ता, सुअर वर्ष। चीन का यह नया वर्ष ड्रैगन वर्ष है।

नए साल का उत्सव मनाने की परंपरा संभवतः मानव सभ्यता की शुरुआत से चली आ रही है। चार हजार साल पहले बेबीलोनियन सभ्यता में नव-वर्ष का उत्सव मनाने का उल्लेख मिलता है। इनका नव-वर्ष भी जनजातीय समुदायों की भांति ही बसंत आगमन से शुरू होता था और यह 21 मार्च को मनाया जाता था। इसी क्रम में प्राचीन हिब्रू अपना नववर्ष 5 सितम्बर से 5 अक्टूबर के बीच मनाते थे।

वैसे कमोबेश पूरी दुनिया ग्रेगोरी कैलेंडर के अनुसार पहली जनवरी को नववर्ष मनाती है। यह कैंलेंडर ईसाइयों के धर्मगुरु पोप ग्रेगोरी आठवें ने साल 1582 में तैयार किया था, इसलिए कट्टर हिंदूवादियों के लिए यह कैलेंडर भी अब अछूत होते जा रहा है। वैसे हिंदुओं की बात तो बाद की बात है, ईसाइयों का अपना ही एक अन्य समुदाय 'ईस्टर्न ऑर्थोडॉक्स' चर्च भी इस कैलेंडर को नहीं मानता। वे रोमन कैलेंडर के अनुसार नया साल 14 जनवरी को मनाते हैं। वैसे ही सारा इंग्लैंड 1-जनवरी को नया साल मनाता, जबकि वहीं के है पेमब्रोकशायर काउंटी के ग्वाउन वैली के लोग जूलियन कैलेंडर को मानते हैं, और उसकी पहली तिथि जोकि 13 जनवरी को नये साल का उत्सव मनाते हैं।

नव-वर्ष मनाने के तरीके भी अलग-अलग हैं, जबकि कुछेक समानताएं भी देखने में आई है। जापान में नया साल 13 या 14 अप्रैल को मनाया जाता है, इसे अपनी भाषा में वे 'सोंगक्रण' कहते हैं। जापानी नव-वर्ष को 'गनतन-साई' या 'ओषोगत्सू' के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन जापान के लोग मंदिरों में जाते हैं और खुद को तथा अपने परिवार को परेशानी से बचने के लिए वे 108 बार घंटी बजाते हैं। यह 108 की संख्या हिंदूओं में भी बहुत पवित्र तथा महत्वपूर्ण मानी जाती है। मालाओं में मनकों की संख्या 108 होती है, सारे मंत्र 108 बाद पढ़े जाते हैं, वगैरह वगैरह। जापानियों का नववर्ष मनाने का तरीका हमारे होली त्योहार मनाने के तरीके से काफी हद तक मिलता है। इस दिन ये एक-दूसरे पर ठंडा पानी

डालकर नया साल बनाते हैं। इनका नया साल भी 13 या 14 अप्रैल को मनाया जाता है।

भारत में हिंदुओं का नव वर्ष विक्रम संवत के अनुसार चौत्रा शुक्ल प्रतिपदा से आरंभ होता है। इसी दिन नवरात्रि शुरू होती है और इसे गुड़ी पड़वा त्यौहार के नाम से भी मनाया जाता है। जबकि जैन संप्रदाय दीपावली के दूसरे दिन नव-वर्ष मनाता है, क्योंकि वीर निर्वाण संवत के अनुसार यह दिन नव-वर्ष की शुरुआत माना जाता है। सोचने वाली बात यह है कि आज मानव चाँद पर पहुँच चुका है, मंगल ग्रह पर दस्तक दे रहा है और हमारे यान सूरज तक की दूरी नापने को तैयार हैं। और चँद्रमा और तारों की गति के आधार पर समय को नाप रहे हैं। इतना ही नहीं हम आज भी वैज्ञानिक आधार को छोड़कर धार्मिक मान्यताओं के आधार पर अलग-अलग कैलेंडर प्रणालियों को अपनाए हुए हैं। मनुष्य स्वभाव से ही उत्सवधर्मी रहा है। चाहे नववर्ष हो अथवा कोई अन्य उत्सव या त्योहार, दरअसल मानव की सामूहिकता ही उत्सव के उत्स का मूल है। और इस तत्व को हमारे पूर्वज जनजातीय समुदाय भली-भांति समझते हैं। जनजाति समुदायों में भी बसंत आगमन, अथवा नई फसलों के स्वागत के पर्व को नववर्ष के रूप में मनाया जाता है।

इसके लिए हर गाँव अपनी-अपनी सुविधा अनुसार नववर्ष त्योहार मनाने अपनी तिथि तय करता है।

मध्य-पूर्व भारत के मुण्डा, भूमिज, संथाल और उराँव आदिवासी समुदायों के प्रमुख पर्व 'सरहुल' को इनका नववर्ष का उत्सव मान सकते हैं। सरहुल उत्सव प्रायः चैत्र महीने के तीसरे दिन, चैत्र शुक्ल तृतीया को मनाया जाता है। यह नए साल की शुरुआत की निशानी है। हालांकि इस त्योहार की कोई निश्चित तारीख नहीं होती क्योंकि विभिन्न गांवों में इसे विभिन्न दिनों पर मनाया जाता है।

इसी तरह दण्डकारण्य बस्तर के जनजाति समुदायों में 'चैतराई पर्व' को नववर्ष पर्व की तरह मनाया जाता है।

इसी दिन आम खाने की शुरुआत होती है, इसलिए बस्तर की कई भागों में इसे आमा-जुगानी या मरका पंडुम भी कहते हैं। इसी के साथ चार-चिरौंजी के फलों का भी भोग लगाया जाता है। महुआ भले इस त्यौहार के पहले बीन लिया गया हो पर उसे महुवा से शराब बनाने का कार्य इस पर्व से ही शुरू होता है। इस दिन मत्स्याखेट की भी परंपरा है। देवताओं पूर्वजों के आवाहन, पूजन और भोग लगाने के बाद, सारी रात चलने वाले सामूहिक नृत्य और गान में तो इनकी आत्मा बसती है।

कोलंबस तथा यूरोपीय उपनिवेशवादियों के 15वीं शताब्दी में अमेरिका में कदम रखने के पहले महामेरिका के मूल आदिवासी, 'अमेरिण्डियन' भी संभवतः इसी तरह के उन्मुक्त उत्सव त्यौहार मनाते रहे होंगे। पर अब उनकी बची खुची सौभाग्यशाली? संतानें अपने प्रबल पराक्रमी राष्ट्र की मुख्य धारा के साथ कदमताल करते हुए ग्रेगोरी कैलेंडर के हिसाब से एक जनवरी को नया साल मनाती हैं।

विचारणीय बिंदु यह है कि सर्वव्यापी बहुराष्ट्रीय बाजारवाद के दबाव तथा उग्र राष्ट्रवाद के उभार के दौर में क्या हमारे जनजातीय समाज की ये विलुप्तप्राय परंपरागत संचित ज्ञान का खजाना, रीति-रिवाज, नृत्य, गीत संगीत, कला, संस्कृति, बोली-भाषा और इनके ये तीज त्यौहार आने वाले दिनों में बचे रह पाएंगे, या फिर ये भी 'अमेरिण्डियन' की भांति तिरोहित हो जाएंगे, विलुप्त हो जाएंगे?

इन्हीं सवालों का सकारात्मक जवाब ढूंढ़ने में पिछले लगभग एक दशक से लगी हुई है आपकी यह प्रिय पत्रिका ककसाड़। हमने तेजी से छीजती जा रही हमारे पुरखों की इस महान धरोहर को, हमारी आने वाली पीढ़ियों की इस अनमोल विरासत को यथासंभव यथाशक्ति सहेजने, संजोकर रखने तथा इसके दस्तावेजीकरण करने की कोशिश की है। यह कार्य सचमुच बहुत ही बड़ा है, हमारी सोच की सीमाओं से भी बड़ा, गुरुतर और उतना ही कठिन व जटिल भी। जबकि हमारी शक्ति व साधन दोनों ही अत्यंत अल्प और सीमित हैं। परन्तु हमारा संकल्प मजबूत है, और हमारी ताकत हैं पत्रिका से जुड़े हुए आप जैसे सुधी पाठक तथा रचनाकार का साथ और विश्वास। आशा है कि आपका यह साथ तथा विश्वास हमें इस वर्ष और आगे भी इसी तरह उत्तरोत्तर और ज्यादा मिलता रहेगा।

नव वर्ष की शुभकामनाओं सहित!

आपका

डॉ. राजाराम त्रिपाठी

मो. 94252-58105